REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

मध्यकालीन रानी दुर्गावती के 16 वर्षों का स्वर्णिम प्रशासन

डॉ. चौधुरी शिवव्रत महान्ति
निदेशक, कृष्णराव शोध संस्थान, जबलपुर
मानद व्याख्याता, प्रा.भा.ई. संस्कृति व पुरातत्त्व, रादुविवि जबलपुर

प्रस्तावना :

14वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर 18वीं शताब्दी के अंत तक गढ़ मंडला राज्य के इतिहास में अनेक गौंड़ राजाओं की शासन व्यवस्था का उल्लेख है। इनमें से प्रत्येक का शासनकाल इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। किन्तु प्रसिद्ध गौड़वाना महाराज संग्रामषाह की पुत्रबधु और बहादुर नरेष दलपतिशाह की धर्मपत्नी वीरांगना रानी दुर्गावती की इतिहास में एक अपनी पृथक पहचान है। उसने अपने सतीत्व, मर्यादा, और आन की रक्षार्थ अपना बलिदान किया और एक बार पुनः लोलुप,साम्राज्य विस्तार की कुटिलनीति को वहिष्कृत कर चरितार्थ किया कि भारतीय वीरांगनाएँ विजय या मृत्यु इन दोनों में से किसी एक का चरण करती है, परंतु पराधीनता नहीं।

संग्राम शाह के शासनकाल में इसे गढ़ा कटंगा (गोंडवाना) राज्य कहते थे। जिसकी परिसीमा में 52 गढ़ आते थे। रानी दुर्गावती के शासन काल में गौंड़वाना राज्य की राजधानी चौरागढ़ थी जो पूर्व की राजधानी सिंगौरगढ़ की तुलना में अधिक सुरक्षित थी। चौरागढ़ का दुर्ग सिंगौरगढ़ के दुर्ग से अधिक मजबूत था। रानी दुर्गावती के समय इन गढ़ों की संख्या 43 बतलायी गई है। ये गढ़ दुर्ग न होकर एक प्रादेशिक इकाई थें, इनके अंतर्गत लगभग 350 से लेकर 700 गांव आते थे। वर्तमान में 'गढ़' को तसिील, परगना या तहसील का अनुविभाग कह सकते हैं। संपूर्ण राज्य इन गढ़ों में विभाजित था।

रानी के समय गौंडवाना राज्य का पूर्वी भाग रतनपुर से और पश्चिमी भाग रायसेन से मिला हुआ था। इसके उत्तर में पन्ना तथा दक्षिण में दक्खन (दक्षिणापथ) स्थित था। इसकी पूर्व से पश्चिम की लंबाई 150 कोस (480 कि.मी.) और उत्तर से दक्षिण चौड़ाई 8 कोस लगभग (256 कि.मी.) थी।

रानी दुर्गावती ने अपने श्वसुर महाराजा संग्रामषाह (1510 ई. से 1543 ई. लगभग 33 वर्षो तक) इस प्रदेश पर सुचारू रूप से शासन करने और पति दलपति शाह (1543 ई. से 1550 ई. लगभग 7 वर्षो तक) द्वारा इसे व्यवस्थित एवं सिरिता प्रदान करने वाले दोनों गुणों का अनुकरण किया दलपति शाह गढ़ामंडला राज्य का सुख वैभव अधिक समय तक नहीं भोग पाया और 1550 ई. के प्रारंभ में उसकी मृत्यु हो गई। उस समय दलपति शाह की आयु 35 वर्ष की थी और एक मात्र पुत्र वीरनारायण पांच वर्ष का था। इस प्रकार वह अपनी 26 वर्षीय धर्मपत्नी, जिसे राज्यशासन का अधिक अनुभव नहीं था छोड़ स्वर्ग सिधारा। यहॉ पर दुर्गावती के धैर्य एवं अदम्य साहस की प्रषंसा करनी होगी कि जो इतने बड़े राज्य की बागडोर सम्भालने वाले पति को खोकर अपने अवयस्क पुत्र वीरनारायण के साथ गढ़ा राज्य की प्रजा के सामने थी।

दुर्गावती ने चतुर, साहसी एवं कर्तव्य के प्रति निष्ठावान दीवान आधारसिंह कायस्थ और मान ब्राह्मण से परामर्श लेकर अपने पुत्र वीरनारायण को राजा की पदवी दी और वास्तविक शक्ति को अपने हाथ में रखकर राज्य कार्य का संचालन प्रारंभ कर दिया।

उस समय भारत के मध्य इतने बड़े राज्य नहीं थे। उत्तर भारत में अस्थिरता का काल था। 1545 ई. में शेरशाह सूरी की आकस्मिक मृत्ये के बाद उसके उत्तराधिकारी उतने शक्तिशाली नहीं निकले अतः दिल्ली

सल्तनत अस्थिरता का केन्द्र बन गई। उधर हुंमायूँ दिल्ली सल्तनत का सुख नहीं भोग पाया और उसकी मत्यु हो गई। इस अवसर पर मुगल साम्राज्य की गद्दी पर अकबर सत्तारूढ़ हुआ। 1556 ई. में पानीपत के युद्ध में हेमु को परास्त करने के पश्चात मुगल साम्राज्य को स्थिरता प्रदान करने का संकल्प किया। बैरमखां के पतन और माहम अनगा की मृत्यु के पश्चात सभी शासन सूत्र अपने हाथ में ले लिये।

ऐसे काल में मध्यभारत एवं देश के कुछ स्वतंत्र राज्यों को विकसित होने का अच्छा अवसर मिला। गोंड़वाना राज्य की सीमा में पूर्व दिशा में बघेलों का शासन था। बघेल शासक रामचंद्र उस समय वहा राज्य कर रहा था। संग्रामशाह एवं दलपतिशाह ने बघेलों के अच्छे संबंध थे। यहीं कारण है िकइस अवधि में गढ़ा राज्य और बघेलों के बीच किसी प्रकार के संघर्ष का उल्लेख नहीं है।

रानी दुर्गावती को राज्य भार अचानक ही सम्भालना पड़ा जिसमें उसने सदैव साहस एवं योग्यता का परिचय दिया राज्य शासन से संबंधित उसने दूर दर्शिता से महान कार्य किया। उस समय गढ़ा राज्य अन्य राज्यों की तुलना में विस्तृत और सम्पन्न था। इस राज्य में आने वाले गढ़ों का उल्लेख संलग्न तालिका में वर्णित है। देखिए परिशिष्ट।

रानी दुर्गावती का स्वर्णिम काल – (1548–1964)

उर्वरा सर्वतो भूमिः मध्यतो नर्मदा नदी।
विज्ञा दुर्गावती राज्ञी, गढ़ाराज्ये त्रयोगुणाः।। (केशव दीक्षित)

अर्थात रानी दुर्गावती के शासनकाल में ''चारों और उपजाऊ भूमि है, बीच में नर्मदा नदी है और विदुषी दुर्गावती वहां की रानी है।''

गौंड़ नरेश अपने राज्य में पूर्ण स्वतंत्र थे। स्वतंत्रता का यह क्रम 1480 ई. से लेकर 1564 ई. तक अर्थात् 84 वर्षो तक विद्यमान रहा, इस बीच में संग्रामशाह, दलपतिशाह, और रानी दुर्गावती की शासन था। ये नरेश दिल्ली सल्तनत के आधीन नहीं थे और उसे कर या मेह इत्यादि प्रस्तुत नहीं करते थे। अपनी राज्य सत्ता के वे पूर्ण शासक थे और राजनीतिक सीमा के भीतर किसी दूसरे का वर्चस्व स्वीकार नहीं करते थे।

रानी दुर्गावती के बलिदान के पश्चात अर्थात 1564 ई. से 1678 ई. तक इस राज्य मे 'मनसबदारी काल' स्थापित हुआ जिसमें गएा मंडला राज्य के राजा मुगलसम्राट के सम्मुख अपनी हाजिरी एवं भेंट प्रस्तुत करते थे। 1678 ई. से 1764 ई. की अवधि का इस राज्य का 'अवसान काल; कह सकते हैं। इस अवधि में गोंड़ राज्य का प्रचंड सूर्य अस्त हो गया।

रानी दुर्गावती के शासनकाल में अबुलफजल के शब्दों में 'इस राज्य में कई स्थानीय' 'राजा' विद्यमान थे। इन्हें 'राजा ' और कहीं 'राय' भी कहा जाता था। स्थानीय नाम से राजाओं के नाम चलते थे। उदा. सलवानी का राजा, देवहर का राजा, खटोला का राजा, मंडला का राजा,लाजी का राजा इत्यादि।

राजा का अभिप्राय यहां पर इन्हें प्रदत्त उपाधियों से था। ये स्वतंत्र राजा नहीं थे अपितु ये सभी उपाधिधारी राजा रानी दुर्गावती के आधीन थे। ये राजागण आवश्यकता पड़ने पर रानी के सहायतार्थ अपनी सैनिक टुकड़ियां भी भेजा करते थे। इसके अतिरिक्त भू–राजस्व की दृष्टि से लगान का एक भाग रानी के कोष में जमा करते थे।

राजा की राय के अधीन जो भू–भाग हुआ करता था उसे वे तालुकेदारों या ठाकुरों के माध्यम से संचालित करते थे। ये लोग भी अपने पास सैनिक टुकडी रखते थे। ये अपने छोटे राजा या राय को सैनिक या धन भेजते रहते थे। इन राजा या राय के अतिरिक्त इत्तरारों का उल्लेख मिलता है। लो इत्ता या जागीरों के स्वामी थे।

राज्य शासक के अंतर्गत राज्य का एक बड़ा भाग रानी के सीधे नियंत्रण में था और इस भाग के गांवों में शिकेदार नामक अधिकारी नियुक्त किया जाता था। अबुलफजल के अनुसार दुर्गावती के आधीन 23000 कृषि सम्पन्न गांव थे, इनमे से 12000 गांवों मे शिकदार थे। शेष 11000 गांव रानी के अधीन थे और उनके मुखिया रानी दुर्गावती के नियंत्रण में थे।

इस शासन व्यवस्था की संरचना निम्नलिखित चार्ट में स्पष्ट की गई है।

रानी दुर्गावती के शासन काल में शासन का संगठन एवं सरंचना

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गढ़ा मंडला राज्य का आधे से अधिक भाग रानी द्वारा नियुक्त अधिकारियों द्वारा प्रशासित होता था और शेष भाग इन राजाओं, जागीदारों और रायों के नियंत्रण में था जो रानी के आधीन थे।

रानी दुर्गावती ने अपने शासने काल में परंपरागत शासन व्यवस्था को विद्यमान रखा, केन्द्र या राजधानी में रानी के प्रधान अधिकारी दीवान, मंत्री और पुरोहित होते । दीवान सम्पूर्ण

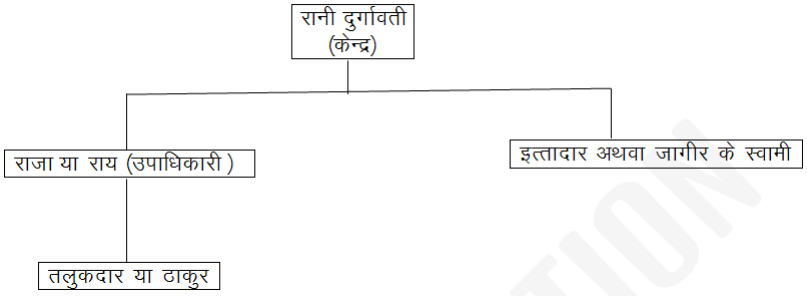

प्रधान अधिकारी दीवान, मंत्री और पुरोहित होते थे। दीवान सम्पूर्ण राज्य की व्यवस्था की देखभाल करता था। वह रानी को परामर्श भी देता था। रानी के समय दीवान आधार सिंह कायस्थ को हम रानी के साथ युद्धक्षेत्र में परामर्श देते हुए पाते हैं। पुरोहित, धर्म के संबंध में उत्तरदायी होता था। मान ब्राह्मण को वीरनारायण के सिंहागनरूढ़ होते समय अभिषेक करता हुआ देखा गया है। इन दोनों के परामर्श से ही उसे राजा घोषित किया गया था। तदन्तर बालक वीरनारायण की संरक्षिकों के रूप में संपूर्ण गौंड़वाा राज्य के प्रषासन का सूत्र संचालन रानी दुर्गावती ने अपने हाथों में लिया। आगे हम देखते हैं कि रानी ने महेश ठाकुर एवं दामोदर ठाकुर को भी राजपुरोहितों के रूप में नियुक्त किया ये दोनों विद्वान मिथिला से बुालए गये थे।

रानी दुर्गावती के शासन काल में भू–राजस्व (लगान) और भूस्वामित्वः

गौंड़वाना नरेश राज्य की भूमि पर किसी प्रकार के स्वामित्व का दावा नहीं करते थे। वे उपज के एक निश्चित भाग पर अपना अधिकार स्वीकार करते थे। रानी दुर्गावती लगान को बहुत ही सरल विधि से वसूल करती थीं वह धार्मिक, सद्चरित्र शासिका होने के कारण अनावृष्टि (सूखे) अथवा अकाल के समय लगान से कृषकों को मुक्ति प्रदान करती थीं। जनता पर थोड़े से कर लगाए जाते थे। ग्राम का मुखिया लगान वसूल करता था, जिसे पटेल कहते थे। पटेल कृषकों से उचित एवं निर्धारित मात्रा में लगान वसूल कर शासकीय कोष में जमा करता था। कृषकों को कृषि कार्य हेतु पटेल प्रतिवर्ष एक वर्ष के लिए पट्टा देता था। पटेल सरकार का एजेंट या मुखिया था। लगान वसूल करने की जिम्मेदारी उसी पर रहती थी। पटेल का पद वंष परंपरागत होता था। इसे बेचा नहीं जा सकता था। पटेल की सहायेता के लिए पटवारी, कोटवार, या चौकीदार होता था। ग्राम के छोटे–मोटे विवादों का निपटारा पटेल ही कर देता था। उसे केन्द्र सरकार द्वारा वेतन के रूप में नकद राशि या भूमि दी जाती थी जिससे उसे लगान का भुगतान नहीं करना पडता था।

सैनिक व्यवस्थाः

रानी दुर्गावती की सेना में हाथी, घुड़सवार, बंदूकची, तीरंदाज और पैदल सेना का भी उल्लेख मिलता है। रानी ने अपनी सेना में न केवल हिन्दुओं को अपितु मुसलमानों को भी यथोचित स्थान दिया था। अनेक मियाना अफगान गढ़ा राज्य की सेना में नौकरी करते थे। दुर्गावती अफगान सैनिकों की योग्यता का लाभ

उठाना उचित समझकर उन्हें भारी संख्या में अपनी सेना में भर्ती किया था। उनमें से कुछ सेना में उच्च पदों पर आसीन थे। उदाहरणत–शम्सखा मियना रानी की सेना का एक महतवपूर्ण सैन्याधिकारी था।

इसके अतिरिक्त रानी के पास नर्रई युद्ध में बलिदानी सैन्याधिकारियों में कनुर कल्यान बखीला (बप्पेला), चेकरमन खरचली, खानजहां उकीब, महारख ब्राह्मण आदि थे।

रानी दुर्गावती ने अपने प्रशासन के आरंभ में सिवनी मालवा के मियाना अफगान के एक दल को जिसने गढ़ा राज्य पर आक्रमण किया था, को पराजित किया। द्वितीय आक्रमण मालवा के शासक सुजात खॉ के पुत्र बाजबहादुर ने 1556 ई. में गद्दी पर बैठने के बाद किया। बाजबहादुर की सेना को एक दर्रे के सिरे पर जहॉ दुर्गावती की पैदल सेना दृढ़ता से जीम थी, लोहा लेना पड़ा। इस संघर्ष में बाजबहादुर को तो किसी प्रकार अपने प्राण बचाना पड़े। बाजबहादुर तो किसी प्रकार भाग गया किन्तु उसकी संपूर्ण सेना घेर ली गई और बंदी बना ली गई। कितने ही उसमें से मौत के घाट उतार दिए।

मालवा के शासक बाजबहादुर को परास्त करने से यद्धपि दुर्गावती को प्रादेशिक लाभ नहीं हुआ, किन्तु उसका यश चारों ओर फैल गया शायद इसकी गूंज दिल्ली अकबर के कानों में सुनाई दी।

रानी के सेना के विभिन्न अंग फौजदारों के आधीन थे। नर्रई नाले के युद्ध में हाथियों के फौजदार अर्जुनदास बैस का उल्लेख है। सेना में परंपरागत अस्त्र–शस्त्रों का प्रयाग होता था। उदा. बंदूक, तलवार, भाले आदि। पैदल सेना तलवार, तीरकमान, भाले तथा कटार से युद्ध करती थी। दुर्गावती के पास तोपखाने का अभाव था। यद्यपि रानी के शासनकाल के तीन दशक पूर्व पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर द्वारा तोपों के प्रयोग किया जा चुका था। ऐसा प्रतीत होता हैकि रानी उबड–खाबड़ वन स्थली एवं दर्रे मोर्चे के लिए तोपों का प्रयोग करना धन का दुरूपयोग समझा हो।

रानी दुर्गावती की सेना विभिन्न गढ़ों में राजाओं एवं रायों के बीच विखरी हुई थी। उसे आवश्यकता पड़ने पर या गुप्तचरों द्वारा सूचना प्राप्त होने पर मोर्चे पर बुला लिया जाता था। दुर्गावती में शौर्य की कमी नहीं थी। वह युद्ध के मोर्चे पर हाथी पर सवार होकर युद्ध का संचालन करती थी। नर्रई नाले के युद्ध में सुबेदार अब्दुल मजीद, आसफखां की सैन्य शक्ति की तुलना में रानी की शक्ति निर्बल थी। फिर भी वह युद्ध के दुसरे दिन यह समाचार सुनकर संसट के समय सेना का न केवल कुशल नेतृत्व किया अपितु पुरूषोचित धैर्य और साहस का परिचय दिया। इसी युद्ध के दूसरे दिन यह समाचार सुनकर कि आसफखां ने तोपखाना लेकर घाटी प्रदेश की किले बंदी कर ली है उसकी सेना ने पर्वतो में मोर्चेबंदी कर ली है तो भी रानी युद्ध के जोश में अपने हाथियों में से सर्वश्रेष्ठ और ऊॅचे तथा तेज हाथी सरमन पर बैठकर घाटी से बाहर निकली।

सांस्कृतिक स्थितिः

रानी दुर्गावती ने अपने पूर्ववर्ती गोंड राजाओं द्वारा धर्म और संस्कृति के संरक्षण करने के व्यवहार को अपनाया। उसने कलचुरी नरेशों द्वारा अपनायी गईं सांस्कृतिक उदारता को स्वीकार किया। इस प्रकार उसने धर्म के संदर्भ में सामान्य जीवन में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया। कलचुरियों द्वारा निर्मित मठ और मंदिर उसे विरासत में मिले अतः उन स्थानो का उसने धार्मिक अनुष्ठान हेतु प्रयोग किया।

रानी दुर्गावती चंदेल राजपूत राठ और महोबा के राजा शालिवाहन की पुत्री एवं वैष्णव धर्म की अनुयायी थीं। अपने शासनकाल में उसने जनहित के अनेक कार्य किए। कई मंदिरों, धर्मशालाओं और सरोवरों का निर्माण किया। आज भी जबलपुर स्थित रानीताल दुर्गावती की स्मृति को अक्षुण्य बनाए हुए है।

मध्यकाल में मिथिला, हिन्दू धर्मशास्त्र, स्मृति, दर्शन एवं कर्मकांड के विद्वानों का गढ़ था। वहां के विद्वान पण्डित विभिन्न राजदरबार में सम्मान प्राप्त करते थे। रानी दुर्गाती के शासन काल में सबसे प्रमुख विद्वान महेश ठाकुर थे जो राजा संग्रामशाह एवं दलपति शाह के समय भी गढ़ा में थे। इन्होंने न्याय, ज्यातिष, कर्मकाण्ड व्याकरण एवं धर्मशास्त्र पर अनेक ग्रंथों की रचना संस्कृत में की।

'विधितत्व चिन्तामणि', अतिचार निर्णय' सिद्धांत सुधा, दायसार, प्रायश्चित प्रकाश, शुद्धतत्व परिच्छेद, एकाग्निविधान पद्धति आदि उनकी प्रसिद्ध रचनसऍह ै। उन्होंने इतिहास विषय पर 'सर्वदेश वृतांत संग्रह ग्रंथ भी लिखा है।

महेश ठाकुर के अग्रज दामोदर ठाकुर संग्राम शाह से लेकर रानी के शासनकाल में थे। उन्होंने 'संग्रामसाहित्य' 'विवेक दीपिका' एवं 'दिव्य निर्णय' नामक ग्रंथों की रचना की है।

अन्य दरबारी विद्वानों के साथ रानी के समय पद्मनाम भट्टाचार्य संस्कृत के विद्वान थे। उन्होंने 'दुर्गावती विलास' या समयालोक ग्रंथ की रचना की। वीर चम्पू जो कि वीरनारायण को केन्द्र मानकर लिखी गई है। उसके भी रचयिता पद्मनाम भट्टाचार्य हैं।

दुर्गावती के समय अकबर के दरबारी दो विद्वान, गोप महापात्र एवं नरहरि महापात्र गढ़ा आए थे। नरहरि ने ' रूक्मिणी मंगल' की रचना की।

धार्मिक स्थितिः–

रानी दुर्गावती के प्रशासन काल में गढ़ा धार्मिक गतिविधियों को केन्द्र था। प्रसिद्ध धर्मस्थली वृंदावन से संत और विद्वानों का धर्म उपदेशार्थ आवागमन होता रहता था। उत्तर भारत में और दक्षिण भारत को जोड़ने में गढ़ा एक पुनीत स्थल था। धर्मलाभ अर्जित करने वाले यात्री गढ़ा में निवास करने के साथ–साथ पुण्य सलिला नर्मदा मे स्नान कर पुण्य प्राप्त करते थे। दुर्गावती स्वभाव से सद्चरित्र उदार एवं धार्मिक महिला थीं। उसे चंदेल वंष एवं विवाहोपरांत गोंड़राजवंश के संस्कार प्राप्त हुए थे। उसके हदृय में धर्म के प्रति सम्मान की भावना थी। 26 वर्ष की आयु में असमय ही वैधव्य के दुख के कारण रानी का हदृय गतिविधियों की ओर केन्द्रीभूत हो गया। रानी द्वारा साधु–संतों का सम्मान, दान आदि के कार्यों ने गढ़ा को धर्मस्थली बना दिया था। बल्लभ संप्रदाय के प्रसिद्ध संत विट्ठलनाथ का गढ़ा से निकट का संबंध था। वे महाप्रभु बल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र थे। रानी ने उनका स्वागत सत्कार ही नहीं किया अपितु उनसे दीक्षा भी ली। रानी उन्हें 108 ग्राम दान में अर्पित किए। दुर्गावती प्रतिवेदन अपने पुरोहित महेष ठाकुर से पुराा सुना करती थी। स्वामी चतुर्भुजदास ने जिनका जन्म गढ़ा में 1528 ई. को हुआ था, ने बढ़ा में एक राधा कृष्ण मंदिर का निर्माण करवाया था। यह आज भी कढ़ा के पंचमठा स्थल पर विद्यमान है।

संस्कृत के विद्वान अनंत दीक्षित के पुत्र विट्ठल दीक्षित एवं पौत्र केषव दीक्षित दलपति ष्षाह के शासनकाल से लेकर मधुकरषाह के समय तक गढ़ा में रहे।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य :

मध्यकालीन भारत में अपभ्रंश का स्वरूप परिवर्धित होकर आधुनिक भारतीय प्रांतीय एवं आंचलिक भाषाओं का रूप ग्रहण करने ल गा था। दुर्गावती के शासनकाल में भी मध्यप्रदेश की साहित्यिक भाषा विशेषतः गौंड़वाना राज्य में शैरसेनी अपभ्रंश से उत्पन्न हुई थी। अतः 15वीं शताब्दी तक यह ब्रज, बुन्देली, अवधी, बघेली आदि वर्तमान भाषाओं का रूप ले चुकी थी।

विभिन्न सनदों, ताम्रपत्रों शिलालेखों और पत्रों से स्पष्ट होता है कि दुर्गावती के शासनकाल में प्रजा में प्रचलित भाषा देवनागरी लिपि थी। इसके अतिरिक्त उपलब्ध सामग्री इस बात को प्रमाणित करती है। कि उस समय प्रचलित भाषा में बुंदेलखंडी और उर्दू फारसी के शब्दों का प्रयोग किया जाता था। किन्तु साहित्य लेखन की भाषा हिन्दी के स्थान पर संस्कृत ही रही।

इस प्रकार दुर्गावती का स्वर्णिम प्रशासन भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। और इस वीरांगना का बलिदान इन स्वर्णिम अध्यायों का केन्द्र बिन्दु है।

परिशिष्टः

रानी दुर्गावती के शासन के अंतर्गत गढ़ा राज्य सीमा में आने वाले गढ़ निम्नांकित हैः–
(वर्तमान में इनकी स्थिति और नवीन नाम दिये गए हैं।)

1.	गढ़ा	जबलपुर
2.	चेलगढ़(सिहोरा के आसपास का क्षेत्र)	जबलपुर
3.	बरगी	जबलपुर
4.	अमोदा (कटंगी के पास)	जबलपुर
5.	कनौजा (बिलहरी के पास)	जबलपुर
6.	अमरगढत्र	जबलपुर
7.	पाटन गढ (पाटन)	जबलपुर

8. झांझन गढ़	जबलपुर
9. दिया गढ़	डिडौरी रोड पर
10. टीपगढ़	बालाघाट जिले में
11. रायगढ	राजनांदगांव जिले में
12. परताप गढ़	बिलासपुर जिले में
13. लाफागढ़	बिलासपुर जिले में
14. देवहरा गढ़	निवास के पास
15. मारूगढ़	कालपी के पास
16. बांका गढ़	शाहपुर के पास
17. फतेहपुर	होषंगाबाद जिले में
18. निमुआगढ़	नरसिंहपुर जिले में
19. भैवरगढ़	नरसिंहपुर जिले में
20. पूनागढ़ (पनागढ़)	नरसिंहपुर जिले में
21. टवनसौर	सिवनी जिले में
22. डोगरताल	सिवनी जिले में
23. करवागढ़ (कूवागढ़)	सिवनी जिले में
24. चौरई	छिंदवाड़ा जिले में
25. पवही करही	पन्ना जिले में
26. शाहनगर	पन्ना जिले में
27. हटा	दमोह
28. सिगौंरगढ़	दमोह
29. मडियादो	दमोह
30. दमोह	दमोह
31. गढ़ाकोटा	सागर जिले में
32. शाहगढ़	सागर जिले में
33. गढ़पहरा	सागर जिले में
34. धमोनी	सागर जिले में
35. रहली	सागर जिले में
36. इटवा	सागर जिले में
37. खिमलासा	सागर जिले में
38. राहतगढ़	सागर जिले में
39. देवहरी	सागर जिले में
40. गौरझामर	सागर जिले में
41. आमोदागढ़	अज्ञात
42. संतागढ़	अज्ञात
43. बाघमार	अज्ञात
44. खुर्रई	सागर जिले में

उपर्युक्त गढ़ों के आधार पर वर्तमान में गढ़ा–मंडला राज्य की सीमा में– सागर, दमोह, नरसिंहपुर, मंडला, छिंदवाड़ा, सिवनी, बैतूल, बालाघाट, और राजनांदगांव का संपूर्ण क्षेत्र, पन्ना जिले का दक्षिणी भाग, विजयराघवगढ़ क्षेत्र छोड़कर जबलपुर जिला, छत्तीस गढ के बिलासपुर जिले के उत्तरी भाग और होशंगाबाद जिले की सोहागपुर तहसील आते थे। इस क्षेत्र की पूर्व–पश्चिम लंबाई लगभग 475 किमी तथा दक्षिण सीमा की चौड़ाई लगभग 400किमी थी इतना विस्तृत राज्य उस काल मध्यभारत और उत्तर भारत में कोई नहीं था।

LBP PUBLICATION

संदर्भ सूची

1. रामनगर शिलालेख श्लोक–15 हाल पृ. 14 एवं गढेशनृपर्णनम् श्लोक 28 पृ. 195, ओझा, रूपनाथं सम्पादक भावे, जी.ही. 1940
2. वर्तमान में सिंगरामपुर ग्राम से प्रसिद्ध है और जबलपुर दमोह मार्ग पर जबलपुर से 50 किमी की दूरी पर स्थित है।
3. अबुल फजल, अकबर नामा अनु. एच. बेबरिज जिल्द.2 पृ. 326–327
4. अबुल फजल, अकबर नामा अनु. एच. बेबरिज जिल्द.2 पृ. 326
5. अबुल फजल, अकबर नामा अनु. एच. बेबरिज जिल्द.2 पृ.
6. अबुल फजल, अकबर नामा अनु. एच. बेबरिज जिल्द.2 पृ. 323 एवं कन्निघम रानी दुर्गावती (वीरनारायण) का शासनकाल 1948 से 1563 ई. मानते है परिशिष्ट छः पृ 23,24
7. अबुल फजल, अकबर नामाए अनु. एच. बेबरिज जिल्द.2 पृ. 326–327
8. अबुल फजल, अकबर नामाए अनु. एच. बेबरिज जिल्द.2 पृ. 324
9. पाठक गणेश दत्तः गढ़ामंडला का पुरातन इतिहास, 1905 पृ. 13
10. शील, योगेंद्रनाथः मध्यप्रदेश और बरार का इतिहास, 139
11. अकबर नामा अनु. एच. बेबरिज जिल्द.2 पृ. 329
12. इलियट एवं इंडिसन, हिस्ट्री आफ इंडिया एज होल्डबाई इट्स ओन हिस्टोरियन्स जिल्द 8, 1964 पृ.244
13. फरिष्ता, हिन्दुबेगः तारीख ए फरिष्ता अनु, ब्रिम्स पृ. 277
14. मिश्र, सुरेशः गढ़ा के गौंड़राज्य का उत्थान एवं पतन– 1986 प्रकाषक– रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर–पृ.55
15. सुभद्र मिश्रः सर्वदेश वृत्तान्त संग्रह की भूमिका पृ. 17
16. हिन्दी विश्वकोषः जिल्द 28 पृ. 574 सम्पादक बसु, नगेन्द्रनाथ
17. पाठक, रमेश दत्त–पाण्डुलिपी पृ. 13–14
18. मिश्र सुरेश– रानी दुर्गावती मप्र हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल– 1983– पृ 25,2

LBP PUBLICATION